NH Debate - 32

'मोल की आई हुई' को सम्मानजनक जीवन जीने के रास्ते दिलवाओ और उनकी sex-ratio counting transfer करवाओ

जिन राज्यों से लड़कियां बिक के हरयाणा-पंजाब में दुल्हन के रूप में आ रही हैं या बिक के कहीं और जा रही हैं, ऐसी लड़कियों की sex-ratio की counting उन राज्यों में transfer की जाए जहां वो बिकने के बाद गई हैं| और वैसे भी कानूनी हिसाब से वो लड़की शादी के बाद ससुराल के पते पे गिनी जाती है, मायके वाले पे नहीं| और जब एक माँ-बाप ने बेटी बेच ही दी तो उसको इस sex-ratio बढ़ाने का कैसा श्रेय, उनसे यह श्रेय छीन लेना चाहिए|

या तो वो लोग और वहाँ की सरकारें वहाँ की उस गरीबी और बदहाली का कोई ऐसा इलाज बांधें कि माँ-बाप को बेटियां ना बेचनी पड़ें अन्यथा ऐसी better sex-ratio का क्या लाभ? अत: क्या हक़ है उनको और उनकी सरकारों को बढ़िया sex-ratio की शेखी बघारने का अगर वो अपनी लड़कियों की बिक्री ही नहीं रोक सकते तो? और अगर ऐसे पशुओं की तरह मण्डी में बेचने के लिए लड़कियां पैदा करने से sex-ratio की counting numbers ही बढ़ाने हैं तो धिक्कार है ऐसे लोगों की मानसिकता पर|

और हद तो तब होती है जब ऐसे राज्यों में सरकारें चलाते वक़्त ऐसे कृत्यों को ख़त्म करने में फ़ैल होने वाले या उन राज्यों से ऊठ के आये तथाकथित डेमोक्रेट्स एंड सामाजिक-कार्यकर्त्ता जा के वहाँ पे उँगलियाँ तानते हैं, जहां ये लड़किया अंत में अपना कोई ठिकाना पाती हैं| कम से कम वो वेश्या कहलाने के कलंक से बच किसी घर की बहु तो कहलाती हैं|

यह हठधर्मिता ही कही जायेगी, जब ऐसे लोग एक तरफ तो झंडे उठाते हैं inter-caste, inter-state marriages को बढ़ावा देने के, और दूसरी तरफ जब यह चलन निकल चुका है तो बजाये इसपे से बेचने-खरीदने का कलंक हटवा के इन शादियों को बाकायदा रीति-रिवाजों से करना शुरू करवाने के, उनको कोसने के बहाने ढूँढ़ते हैं| और ये महानुभाव किस हद तक दुराभाव से ग्रसित होते हैं इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि ये लड़की को बेचने वाले को छोड़ सिर्फ खरीदने वाले को कोसते हैं|

इन महानुभावो से अनुरोध है कि इन शादियों को रीति-रिवाजों से शुरू करने की जागरूकता फैलाइये जिससे कि कोई तो बेचारी कम-से-कम उम्र भर **"मोल की आई हुई"** कहने के कलंक से बच के स्थानीय दुल्हनों जैसा सम्मानजनक जीवन जी सके|

Phool Kumar Malik - Nidana Heights - Dated: 11/12/2013